IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्नातकस्तर के विद्यार्थियोंकी सामाजिकपरिपक्वता का अध्ययन

Reseacher Scholar`s Rajesh Kumari

Himalayiya University Dehradun (UK)

Reseacher Director: Dr. ANUP BALUNI

सारांश–

स्नातकस्तरमेंविद्यार्थियोंअपने जीवन के एक महत्वपूर्णपड़ावपरहोताहै। इस समय तकविद्यार्थीमेंसंपूर्णविकासलगभगपूर्णहोचुकाहोताहै।विद्यार्थीमेंसभीसामाजिकगुणजैसेप्यार, दया, विश्वास, लगाव, अनुकूलता,सहयोग, नेतृत्वआदिगुणआचुकेहोतेहैं, लेकिनफिरभीकहीं ने कहींविद्यार्थीमेंसामाजिकपरिपक्वतानहींआतीक्योंकिसामाजिकपरिपक्वताउम्र से नहींअनुभवऔरअभ्यास से आतीहै। इस उम्रमेंविद्यार्थीअसामाजिक या समाज के विश्वास व नियमों के विरुद्ध जाकरकामकरताहै।हमेंवास्तविकसामाजिकपरिपक्वता का ज्ञानदेनाआवश्यक है।अतः स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वताकोजानने के लिए पलवलजनपद के 50 लड़के व 50 लड़कियों का अध्ययन कियागया। इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षणपद्धति का उपयोगकरतेहुए, डाटा एकत्रित करने के लिए डॉक्टरनलिनीराय द्वारानिर्मितसामाजिकपरिपक्वस्केल का उपयोगकियागया। इस अध्ययन मेंमाध्य, मानकविचलनऔरटीपरीक्षण का प्रयोगप्रदतविश्लेषण के लिए कियागया। यह अध्ययन स्पष्टकरताहैकिस्नातकस्तर के लड़केऔरलड़कियोंमेंसमानसामाजिकपरिपक्वताहै।हिंदीमाध्यम व अंग्रेजीमाध्यम से पढ़ने वालेविद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वतामेंभीकोईअंतरनहींहै।

मुख्य शब्दःपरिपक्वता,सामाजिकपरिपक्वता, शिक्षा प्रणाली, सर्वेक्षणपद्धति, सांख्यिकीय तकनीक, स्नातकस्तर के विद्यार्थी।

परिचय–

परिपक्वताकिसीसमस्या का समाधानकरने की क्षमताहै, जोअनुभव, स्वस्थवृद्धि औरविकास से आतीहै, न किकेवलआयु बढ़ने से।सामाजिकपरिपक्वता एक महत्वपूर्णप्रक्रियाहै, जोव्यक्तिकोसमाज के साथसमायोजनकरने, प्रभावीढंग से कार्यकरनेऔरपारस्परिकसंबंधोंकोमजबूतकरनेमेंसहायताकरतीहै।जन्म से हीव्यक्तिमेंसामाजिकता की प्रवृत्तिहोतीहै, लेकिनसामाजिकपरिपक्वताउसे समय, अनुभवऔरउचितमार्गदर्शन से प्राप्तहोतीहै। यह परिपक्वताव्यक्तिकोअपनेचिर–परिचितों, दोस्तोंऔरआंतरिकसंबंधों से उचित रूप से जुड़नासिखातीहैतथा एक

ऐसीआंतरिक समझविकसितकरतीहै, जोव्यक्तिगत, पारस्परिकऔरसामाजिकपर्याप्ततताकोसंतुलित दृष्टिकोणप्रदानकरतीहै।

शिक्षा शास्त्री हरलॉक के अनुसार–''व्यक्तिमेंसामाजिकपरिवर्तनहोनाआवश्यक है, क्योंकि एक सामाजिक रूप से व्यवहारिकव्यक्तिकेवलअनुरूपताकोनहींअपनाता, बल्किवहव्यवहार के विभिन्नपहलुओंकोस्वीकारकरताहै या उनसेडरमहसूसकरताहै।'' इसकातात्पर्य यह हैकिव्यक्तिमेंकेवलसामाजिकताहोनापर्याप्तनहींहै, बल्किसामाजिकपरिपक्वताभीअनिवार्यहै, ताकिवहसमाजमेंसंतुलितऔरप्रभावीभूमिकानिभासके।

सामाजिकपरिपक्वताविशेष रूप से युवाओं के विकासमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातीहै, क्योंकि यह उनके व्यवहार, निर्णय लेने की क्षमताऔरसमाजमेंउनकीभूमिकाकोनिर्धारितकरतीहै।स्नातकस्तर के विद्यार्थियों के संदर्भमें यह अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्णहै, क्योंकि यह वहअवस्थाहोतीहै, जबवेअपनेव्यक्तित्व, सामाजिककौशलऔरव्यावहारिक जीवन के लिए आवश्यक सामाजिकपरिपक्वताविकसितकरतेहैं। इस शोधपत्र के माध्यम से स्नातकविद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का विश्लेषणकियाजाएगा, जिससे यह समझा जासकेकिविभिन्नसामाजिककारक, पारिवारिकपरिवेशऔरशिक्षा उनके सामाजिकविकासकोकिसप्रकारप्रभावितकरतेहैं।

शाध की आवश्यकता एवंमहत्व–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसकाअस्तित्वसमाज से जुड़ाहुआहै।समाज के बिनाव्यक्ति का न तोकोई स्वतंत्र अस्तित्वहैऔर न हीवहअपनी क्षमताओं का पूर्ण रूप से विकासकरसकताहै।किंतुआज के आधुनिकरणऔरभौतिकतावादी युगमेंमनुष्य अधिक से अधिकधनकमाने की लालसामेंअपनेमाता–पिता, भाई–बहनों, मित्रों, रिश्तेदारोंतथाआसपास के वातावरण से दूरहोताजारहाहै। यह सामाजिकअलगावकेवलव्यक्तिगतस्तरपरहीनहीं, बल्किव्यापकसामाजिकस्तरपरभीदिखाईदेताहै, जिससेसामाजिकमूल्यों का क्षरणहोरहाहै।

शिक्षा कामुख्य उद्देश्य व्यक्तिकोजागरूक, विवेकशीलऔरनैतिक रूप से मजबूतबनानाहै, लेकिनवर्तमानशिक्षा प्रणालीप्रतियोगीपरीक्षाओं की अंधीदौड़ में उलझी हुईहै।विद्यार्थीकेवलपरीक्षा उत्तीर्णकरनेऔरकरियरबनाने की होड़ मेंव्यस्तहैं, जिसकेकारणवेसहीऔरगलतमेंभेदकरने की क्षमता खोतेजारहेहैं।आज के किशोरोंमें शांति, विश्वास, सहयोगऔरसंस्कृतिप्रेमजैसीसामाजिकपरिपक्वता के गुण कम होतेजारहेहैं, औरवेआपसीकलह, आंतरिक द्वंद्व औरभौतिकसफलता की अंधीदौड़ मेंफंसतेजारहेहैं।ऐसीस्थितिमें, सामाजिकपरिपक्वता का अध्ययन करनाअत्यंतआवश्यक होजाताहै।सामाजिकपरिपक्वता न केवलव्यक्तिकोसमाज के साथसामंजस्य स्थापितकरनेमेंसहायताकरतीहै, बल्किउसे एक जिम्मेदारनागरिकबनने के लिए भीप्रेरितकरतीहै। यह शोधस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का विश्लेषणकरने का प्रयासकरेगा, ताकि यह समझा जासकेकि उनके सामाजिकविकासकोकौन–कौन से कारकप्रभावितकररहेहैंऔरकैसेउनकीसामाजिकपरिपक्वताकोविकसितकियाजासकताहै। इस अध्ययन के निष्कर्षसमाजऔरशिक्षा प्रणालीको यह दिशादेंगेकिविद्यार्थियोंकोअधिकसंतुलित, संवेदनशीलऔरसामाजिक रूप से परिपक्वबनाने के लिए क्याप्रयासकिए जानेचाहिए।

साहित्य समीक्षा–

सामाजिकपरिपक्वता एक महत्वपूर्णतत्वहैजोव्यक्तिकोसमाजमेंसमायोजितहोने, प्रभावी रूप से संवादस्थापितकरनेऔरसामाजिकसंबंधोंकोबेहतरढंग से समझने मेंसहायताकरताहै।विभिन्नशोधकर्ताओं ने सामाजिकपरिपक्वता के विभिन्नआयामों का अध्ययन कियाहै, जो इस विषय की गहन समझप्रदानकरतेहैं।

बोरा (1980)–बोरा ने अपने शोधमेंसामाजिकपरिपक्वतापरअध्ययन करतेहुए ग्रामीणऔर शहरी क्षेत्र के छात्र–शिक्षकों की सामाजिकपरिपक्वता की तुलनाकी। इस अध्ययन मेंदोप्रमुख पहलुओंपरध्यानकेंद्रितकियागयाः (1) ग्रामीणऔर शहरी क्षेत्र के छात्र–शिक्षकों के बीच का अंतर, तथा (2) पुरुष औरमहिलाछात्र–शिक्षकों की सामाजिकपरिपक्वतामेंअंतर।अध्ययन से यह निष्कर्षनिकलाकि शहरी क्षेत्र के छात्र–शिक्षकअधिकसामाजिकपरिपक्वथे।इसकेअलावा, पुरुष छात्र–शिक्षकमहिलाछात्र–शिक्षकों की तुलनामेंअधिकसामाजिकपरिपक्वपाए गए।

चंद (2007) चंद ने अपने शोधमेंछात्र–शिक्षकों की सामाजिकपरिपक्वता का विश्लेषणकिया।अध्ययन मेंपायागयाकिग्रामीणऔर शहरी क्षेत्रों से संबंधितपुरुष औरमहिलाछात्र–शिक्षकों के बीचसामाजिकपरिपक्वतामेंकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींथा।व्यक्तिगतपर्याप्ताऔरसामाजिकपरिपक्वता के विभिन्नआयामोंमेंभीकोईउल्लेखनीय भिन्नतानहीं देखीगई। यह निष्कर्षबताताहैकिसामाजिकपरिपक्वताकेवलभौगोलिक या लैंगिककारकों से प्रभावितनहींहोती, बल्किइसमेंअन्य कारकभीभूमिकानिभातेहैं।

पूजा (2008) पूजा ने वरिष्ठमाध्यमिकविद्यालयों के छात्रों की सामाजिकपरिपक्वतापरमूल्यों के प्रभाव का अध्ययन किया।अध्ययन मेंसरकारीऔरनिजीविद्यालयोंमेंपढ़ने वालेछात्रों के बीचसामाजिकपरिपक्वता के तीनआयामोंमेंमहत्वपूर्णअंतरपायागया।छात्राओंमेंआत्म–निर्देशन की क्षमताअधिकथी, औरवेअपने समकक्षीय छात्रों की तुलनामेंतनावकोअधिकप्रभावीढंग से संभालनेमें सक्षमथीं।हालांकि, मूल्यों के संदर्भमेंसामाजिकपरिपक्वतामेंकोईविशेषअंतरनहीं देखा गया। यह अध्ययन इंगितकरता है किविद्यालय का वातावरणसामाजिकपरिपक्वताकोप्रभावितकरताहै, जबकिमूल्यों का प्रभाव अपेक्षाकृत सीमितहोसकताहै।

डॉ. अर्पिता सिंह (2019)–कानपुरजिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वतापर अध्ययनकिया।अध्ययन मेंउच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रोंऔरछात्राओं की सामाजिकपरिपक्वता के मध्य सार्थकअंतरहै।छात्रों की तुलनामेंछात्राओंमेंसामाजिकपरिपक्वता का स्तरअधिकप्राप्तहुआहै।व्यक्तिगतपर्याप्तता, पारस्परिकसमौचित्य औरसामाजिकउपयुक्तता के संदर्भमेंउच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रोंऔरछात्राओं की सामाजिकपरिपक्वता के मध्य सार्थकअंतरहै।उपरोक्तसभीतीनउप–श्रेणियों के संदर्भमेंसामाजिकपरिपक्वता का स्तरछात्रों की तुलनामेंछात्राओंमेंअधिकहै।

पर्वत सिंह राठौड़ और डॉ. नगेन्द्र सिंह (2020)–ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का अध्ययनकिया।अध्ययन मेंमाध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिंगभेद के आधारपरसामाजिकपरिपक्वतामेंसार्थकअन्तरपायागया।माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आवास की विभिन्नता के आधारपरसामाजिकपरिपक्वतामेंसार्थकअन्तरपायागया।निष्कर्षों से पता चलताहैकि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की परिपक्वतापरलिंगभेद एव आवास की भिन्न्ता का अन्तरपायाजाताहै।अतः विद्यार्थियोंकी सामाजिकपरिपक्वता की कमियोंकोदूरकरसामाजिकपरिपक्वताकोउच्चबनाने का प्रयत्नविद्यालय स्तर, सामाजिकस्तर एवंपारिवारिकस्तरपरकियाजानाआवश्यक है।

अर्शीऔरसहाय (2020) अर्शीऔरसहाय ने किशोरावस्थामेंसामाजिकपरिपक्वताऔरसमायोजन की भूमिकापरअध्ययन किया। इस शोध का उद्देश्य उच्चमाध्यमिकविद्यालय के छात्रोंमेंसामाजिकपरिपक्वताऔरसमायोजन के बीचसंबंधों का विश्लेषणकरनाथा।अध्ययन मेंपायागयाकिकलाऔरविज्ञानविषयों के छात्रों के बीचसामाजिकपरिपक्वताऔरसमायोजनमेंकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींथा। यह दर्शाताहैकिसामाजिकपरिपक्वताविषय–विशेषपरनिर्भरनहींकरती, बल्कि यह एक व्यापकमनोवैज्ञानिकऔरसामाजिकप्रक्रियाहै।

साहित्य समीक्षा का सारांश–

विभिन्न शोधों से यह स्पष्टहोताहैकिसामाजिकपरिपक्वताव्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्णभूमिकानिभातीहै।सामाजिकपरिपक्वताकोप्रभावितकरनेवालेकारकोंमेंभौगोलिकपरिवेश, लिंग, विद्यालय का प्रकार, औरसमायोजन की क्षमता शामिलहोसकतेहैं।हालांकि, कुछअध्ययनों से यह भीस्पष्टहुआहैकिसामाजिकपरिपक्वतामें क्षेत्रीय भिन्नताओं की भूमिकासीमितहोसकतीहै।

इस शोध के माध्यम से स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का विश्लेषणकियाजाएगा, जिससे यह समझा जासकेकिविभिन्न शैक्षणिकऔरसामाजिककारकउनकीपरिपक्वताकोकिसप्रकारप्रभावितकररहेहैं।इससेभविष्य में शैक्षणिकनीतिनिर्माताओं, शिक्षकोंऔरअभिभावकोंकोविद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वताको बढ़ानेमेंमददमिलेगी।

समस्याकथन–स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का अध्ययन।

सामाजिकपरिपक्वताव्यक्ति के समाजमेंप्रभावीसमायोजनऔरस्वस्थसंबंधस्थापितकरने की क्षमताकोदर्शातीहै। यह केवलआयु के बढ़ने से नहींआती, बल्किअनुभव, पारस्परिकसंबंधोंऔरसामाजिकवातावरण से विकसितहोतीहै।वर्तमान समय मेंप्रतिस्पर्धा, डिजिटल युग की बढ़ती निर्भरताऔरसामाजिकपरिवर्तनों ने विद्यार्थियों के सामाजिककौशलऔरपरिपक्वताकोप्रभावितकियाहै।

इस शोध का उद्देश्य **स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का अध्ययन**करनाहै, ताकि यह समझा जासकेकिविभिन्नसामाजिक, पारिवारिकऔर शैक्षिककारकविद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वताकोकिसप्रकारप्रभावितकरतेहैं। यह अध्ययन विद्यार्थियों के सामाजिकसमायोजन, सहयोग, नैतिकमूल्योंऔरसंचारकौशल की स्थितिकोउजागरकरेगा, जिससे उनके संपूर्णविकासमेंसहायकसमाधानसुझाए जासकें।

शोधअध्ययन के उद्देश्य–

इस शोध का मुख्य उद्देश्य स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का अध्ययन करनाहै।इसकेअंतर्गतनिम्नलिखितबिंदुओंपरविशेषध्यानदियाजाएगा–

1. स्नातकस्तर के लड़केऔरलड़कियों के बीचसामाजिकपरिपक्वता के अंतर का पता लगाना।
2. स्नातकस्तरपरहिंदीमाध्यमऔरअंग्रेजीमाध्यम से अध्ययनरतविद्यार्थियों के बीचसामाजिकपरिपक्वता के अंतर का विश्लेषणकरना।
3. स्नातकस्तर के विद्यार्थियोंकी सामाजिकपरिपक्वता की अवधारणाकोस्पष्टकरनाऔरउच्चतम जीवन स्तर के अर्थको समझना।

शोधअध्ययन की परिकल्पनाएं–

इस शोध के अंतर्गतनिम्नलिखितपरिकल्पनाओं का परीक्षणकियाजाएगा–

1. स्नातकस्तर के लड़केऔरलड़कियों के मध्यसामाजिकपरिपक्वतामेंकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींहै।
2. स्नातकस्तरपरहिंदी माध्यम औरअंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरतविद्यार्थियों के मध्यसामाजिकपरिपक्वतामेंकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींहै।
3. स्नातकस्तरके विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वताएवंउच्चतम जीवन स्तर के बीचकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींहै।

शोधप्रारूप–

1. अध्ययन की विधि–यह शोधसर्वेक्षणअध्ययन परआधारितहै, जिसमेंस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का विश्लेषणकियागयाहै।

2. चर–

- स्वतंत्र चरः स्नातकस्तर के विद्यार्थी।
- आश्रितचरः सामाजिकपरिपक्वता।

3. नमूनाचयन–

अध्ययन के लिए यादृच्छिकनमूनाचयन की प्रक्रियाअपनाईगई।इसमेंपलवलजनपद के विभिन्नमहाविद्यालयों से स्नातकस्तर के 100 विद्यार्थी (50लड़केऔर50 लड़कियाँ) शामिलकिए गए।

4. शोधउपकरण–

सामाजिकपरिपक्वताकोमापने के लिए डॉ. नालनीराय द्वाराविकसितसामाजिकपरिपक्वतामापनी का उपयोगकियागया।

5. सांख्यिकीय तकनीक–

अध्ययन मेंप्राप्तआंकड़ों का विश्लेषणनिम्नलिखितसांख्यिकीय विधियों द्वाराकियागया–**माध्य, मानकविचलन, टी–परीक्षण**।

यह शोधस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का मूल्यांकनकरनेऔरविभिन्नकारकों के आधारपर उनके बीच के अंतरको समझने के लिए कियागयाहै।

6. शोधपरिसीमांकन–

- यह अध्ययन पलवलजनपद के महाविद्यालयों से चयनित 100 विद्यार्थियों (50लड़केऔर50 लड़कियाँ) परकेंद्रितहै।
- अध्ययन का मुख्य विषय छात्रों की सामाजिकपरिपक्वता का मूल्यांकनकरनाहै।
- केवलस्नातकस्तर के विद्यार्थियोंकोअध्ययन में शामिलकियागयाहै।
- सामाजिकपरिपक्वता के मापन के लिए डॉ. नालनीराय द्वाराविकसितमापनी का उपयोगकियागयाहै।
- अध्ययन मेंअन्य शैक्षिकस्तरों (जैसे माध्यमिक या परास्नातक) के विद्यार्थियोंकोसम्मिलितनहींकियागयाहै।

यह शोधस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वताकोविश्लेषितकरने के उद्देश्य से सीमितदायरेमेंकियागयाहै।

प्रदत्तों का विश्लेषणतालिका–

इस अध्ययन मेंस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता का मूल्यांकनकरने के लिए सांख्यिकीय विधियों का उपयोगकियागया।प्राप्तआँकड़ों का विश्लेषणनिम्नलिखिततालिका के माध्यम से प्रस्तुतकियागयाहैः–

उद्देश्य 1–स्नातकस्तर के लड़केऔरलड़कियों के बीचसामाजिकपरिपक्वता के अंतर का पता लगाना।

परिकल्पना 1–स्नातकस्तर के लड़केऔरलड़कियों के मध्य सामाजिकपरिपक्वतामेंकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींहै।

तालिका संख्या–1

समूह	संख्या	माध्य	मानकविचलन	टी–परीक्षण
लड़के	50	72.2	14.35	0.155
लड़कियां	50	74.48	7.96	

उपरोक्तगणना के आधारपरलड़कों का माध्य 72.2 हैऔरलड़कियों का माध्य 74.48 है।लड़कों का मानकविचलन 14. 35 है, जबकिलड़कियों का 7.96है।टी–परीक्षण का मान 0.155 प्राप्तहुआ, जो 0.05 के स्तरपरसार्थकमान 1.96 से कम है।इसलिए, शून्यपरिकल्पना (1) अस्वीकारहोजातीहै, अर्थात् लड़केऔरलड़कियों की सामाजिकपरिपक्वतामेंकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींहै।

अध्ययन के परिणामों से स्पष्टहोताहैकिलड़के,लड़कियों की तुलनामेंसामाजिक रूप से अधिकपरिपक्वहैं।

स्नातकस्तर के लड़केऔरलड़कियों के मध्य सामाजिकपरिपक्वता का तुलनात्मकदण्डारेख–1

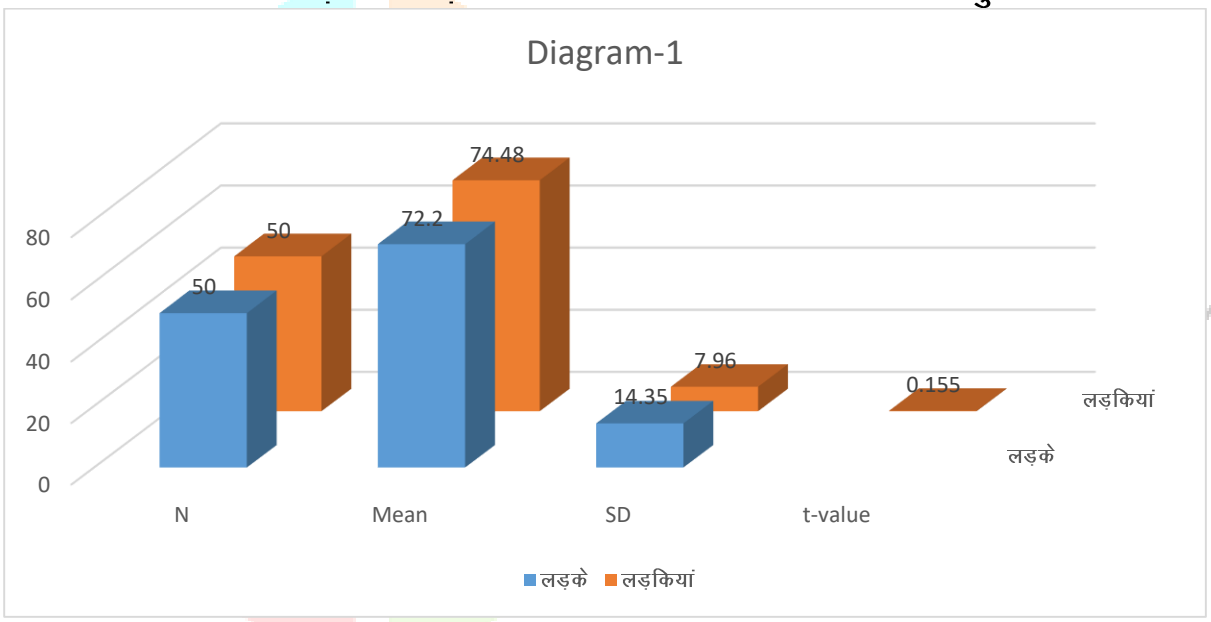

उद्देश्य 2–स्नातकस्तरपरहिंदीमाध्यमऔरअंग्रेजीमाध्यम से अध्ययनरतविद्यार्थियों के बीचसामाजिकपरिपक्वता के अंतर का विश्लेषणकरना।

परिकल्पना 2–स्नातकस्तरपरहिंदी माध्यम औरअंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरतविद्यार्थियों के मध्य सामाजिकपरिपक्वतामेंकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींहै।

तालिका संख्या–2

समूह	संख्या	माध्य	मानकविचलन	टी–परीक्षण
हिंदीमाध्यम	50	88.49	18.2	5.101
अंग्रेजीमाध्यम	50	74.17	7.93	

उपरोक्तगणनाके आधारपरहिंदीमाध्यमके विद्यार्थियोंका माध्य 88.49हैऔरअंग्रेजीमाध्यमके विद्यार्थियोंका माध्य 74. 17है।हिंदीमाध्यमका मानकविचलन18.2है, जबकिअंग्रेजीमाध्यमका 7.93है।टी–मान 5.101 प्राप्तहुआ, जो 0.01 के

स्तरपरसार्थकमान 2.36 से अधिकहै।अतः परिकल्पना संख्या 2अस्वीकार्यहै, जिसकाअर्थहैकिहिंदीऔरअंग्रेजीमाध्यम के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वतामेंमहत्वपूर्णअंतरपायागया।

अध्ययन के परिणामों से स्पष्टहोताहैकिहिंदीमाध्यम के विद्यार्थीअंग्रेजीमाध्यम के विद्यार्थियों की तुलनामेंसामाजिक रूप से अधिकपरिपक्वहैं।

स्नातकस्तरपरहिंदी माध्यम औरअंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरतविद्यार्थियों के मध्य सामाजिकपरिपक्वता का तुलनात्मकदण्डारेख–2

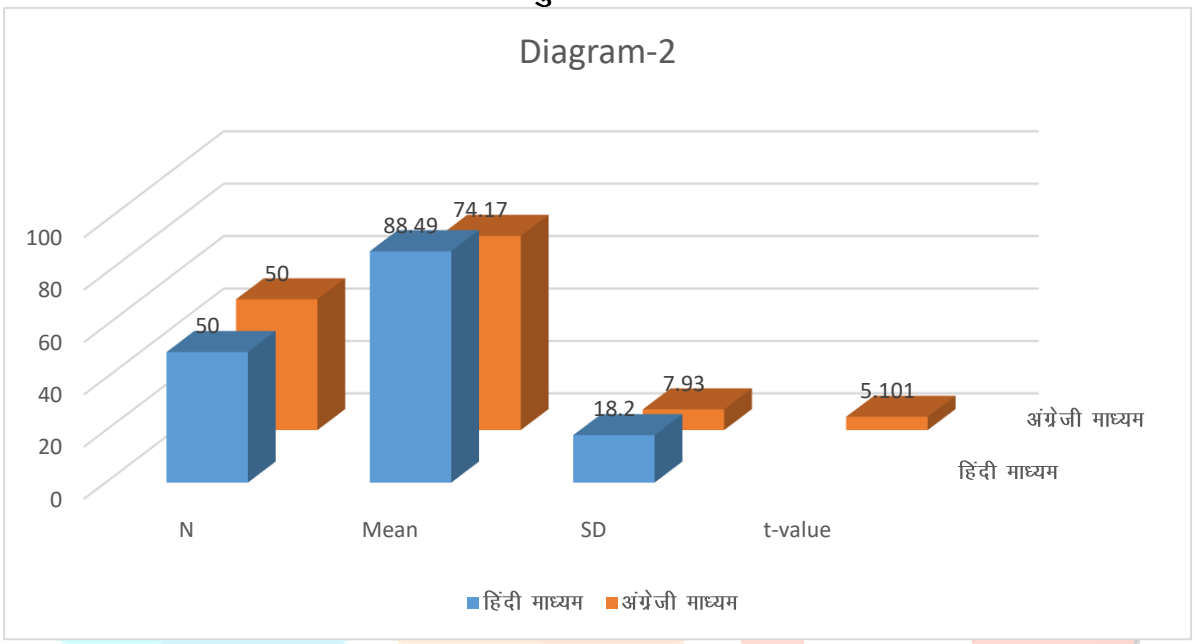

उद्देश्य 3–स्नातकस्तर के विद्यार्थियोंसामाजिकपरिपक्वता की अवधारणाकोस्पष्टकरनाऔरउच्चतम जीवन स्तर के अर्थको समझना।

परिकल्पना 3–स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता एवंउच्चतम जीवन स्तर के बीचकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींहै।

तालिका संख्या–3

समूह	संख्या	माध्य	मानकविचलन	टी–परीक्षण
सामाजिकपरिपक्वता	50	82.18	13.32	0.175
उच्चतम जीवन स्तर	50	77.32	6.91	

उपरोक्तगणना के आधारपरसामाजिकपरिपक्वताके विद्यार्थियोंका माध्य 82.18हैऔरउच्चतम जीवन स्तरके विद्यार्थियों का माध्य 77.32है।सामाजिकपरिपक्वताके विद्यार्थियों का मानकविचलन18.2है, जबकिउच्चतम जीवन स्तरके विद्यार्थियों का 6.91है।प्राप्तटी–मूल्य 0.175 बहुतछोटाहै, जो यह दर्शाताहैकिदोनोंसमूहों के माध्य मेंकोईमहत्वपूर्णसांख्यिकीय अंतरनहींहै।आमतौरपर, यदिt–मूल्य काp–मान 0.05 से अधिकहोताहै, तो शून्य परिकल्पनाकोअस्वीकारनहींकियाजाता।

अध्ययन के परिणामों से स्पष्टहोताहैकिस्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वताऔरउच्चतम जीवन स्तर के बीचकोईमहत्वपूर्णअंतरनहींहै।

स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वता एवंउच्चतम जोवन स्तर का तुलनात्मकदण्डारेख–3

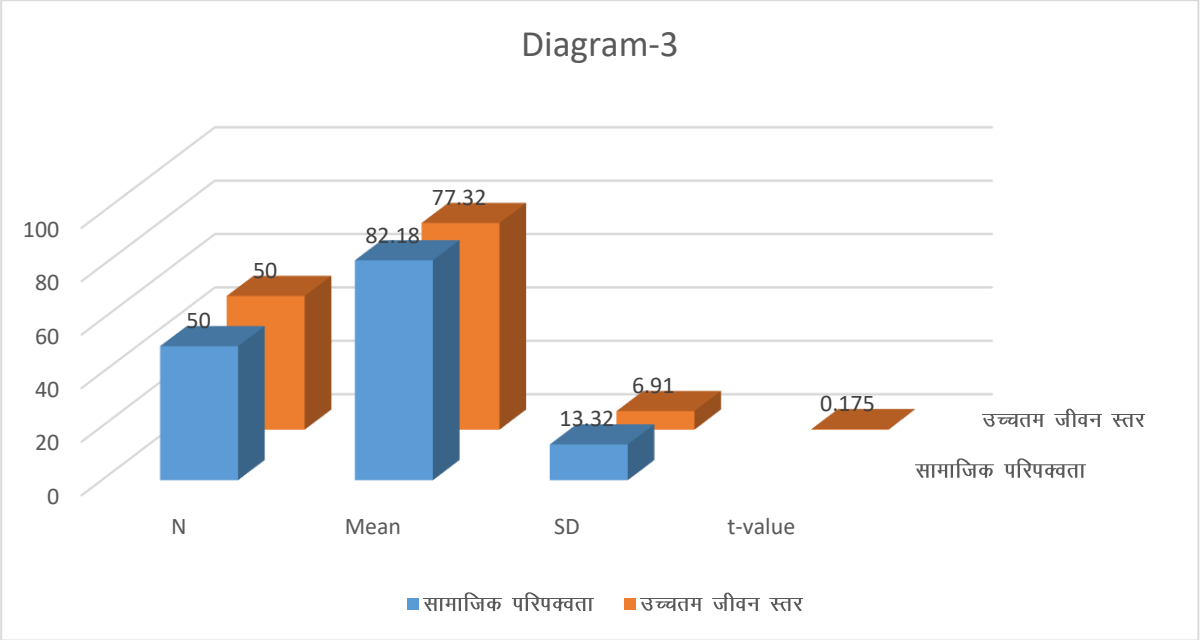

निहिताथ–

इस अध्ययन के परिणामों के आधारपरनिम्नलिखितनिहितार्थप्रस्तुतकिए जासकतेहैं–

1. **उचित जीवन यापन का ज्ञान**–अध्ययन से स्पष्टहोताहैकिसामाजिकपरिपक्वताव्यक्ति के समग्रविकासमेंमहत्वपूर्णभूमिकानिभातीहै।इससेविद्यार्थी जीवन मेंसहीनिर्णय लेने, दूसरों के साथसामंजस्य स्थापितकरनेऔर जीवन की विभिन्नपरिस्थितियोंको समझने में सक्षमहोतेहैं।
2. **सामाजिकपरिपक्वता का महत्व**–सामाजिकपरिपक्वताकेवलव्यक्तिगतविकासतकसीमितनहींहै, बल्कि यह एक बेहतरसमाज के निर्माणमेंभीसहायकहोतीहै।शिक्षणसंस्थानोंमें इसे बढ़ावादेकरविद्यार्थियोंकोनैतिकमूल्यों, सहिष्णुताऔरआत्मनिर्भरता की ओरप्रेरितकियाजासकताहै।
3. **शिक्षा प्रणालीमेंसुधार की आवश्यकता**–अध्ययन में यह भी देखा गयाकिहिंदीऔरअंग्रेजीमाध्यम के विद्यार्थियों की सामाजिकपरिपक्वतामेंअंतरथा।इससेशिक्षा प्रणालीमें उन कारकोंको शामिलकरने की आवश्यकताप्रतिपादितहोतीहै, जोसभीविद्यार्थियोंमेंसमान रूप से सामाजिकपरिपक्वताविकसितकरसकें।
4. **संतुलितव्यक्तित्वविकास**–सामाजिकपरिपक्वता से विद्यार्थी न केवलव्यक्तिगतबल्किसामाजिकऔरव्यावसायिक जीवन मेंभीसफलताप्राप्तकरसकतेहैं।उचितमार्गदर्शनऔरशिक्षा के माध्यम से इस विकासकोऔरअधिकप्रभावीबनायाजासकताहै।
5. **आगे के शोध की संभावनाएं**– यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओंकोसामाजिकपरिपक्वताऔरअन्य कारकों(जैसे–पारिवारिकपृष्ठभूमि, सामाजिकवातावरण, मानसिकस्वास्थ्य आदि) के बीचसंबंधों की गहराई से पड़तालकरने के लिए प्रेरितकरसकताहै।

ग्रंथसूची–

- **चंद्रा, रमेश (2018).**भारतमेंसामाजिकविकास।नईदिल्लीः पब्लिकेशन्स।
- **शर्मा, ललिता के. (2019).**भारतमेंसामाजिकमुद्दे: कारणऔरसमाधान।जयपुरः पब्लिशर्स।
- **कुमार, अरुण (2020).**मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथाशिक्षा में शोधविधियाँ।पटनाः पब्लिशर्स।
- **सिंह, ए. के. (2017).**शिक्षा मेंअनुसंधान।वाराणसीः पब्लिकेशन्स।
- **वर्मा, शिवानी (2019).**व्यावसायिकपरिपक्वता के संबंधमेंसामाजिकपरिपक्वता का अध्ययन (लिंग आधार पर)। दिल्लीः पब्लिशर्स।
- **गुप्ता, आर. के. (2020).**सामाजिकमनोविज्ञानऔरपरिपक्वता।भोपालपब्लिकेशन्स।
- **त्रिपाठी, संजय(2017).**शिक्षा औरसमाजशास्त्र एक विश्लेषणात्मकअध्ययन।वाराणसीः पब्लिशर्स।
- **वर्मा, प्रिया (2016).**भारतीय युवाओं की सामाजिकसंरचनाऔरमानसिकता।जयपुरः पब्लिशर्स।
- **जर्नलऑफक्रिटिकलरिव्यूज़ (2020).**सामाजिकपरिपक्वतापर एक समीक्षात्मकअध्ययन (खंड 06)। प्राप्तकियागयाhttps//www.journalofcriticalreviews.comसे।
- **शानलैक्सजर्नल्स (2021).**शिक्षा औरसमाजशास्त्र परअध्ययन।प्राप्तकियागया https//www.shanla.journals.com से।